1 Course-8

प्रकृतिवाद

शिक्षा में प्रकृतिवाद के रूप-

प्रकृतिवादी शिक्षा के निम्नलिखित रूप है-
1- पदार्थवादी प्रकृतिवाद ।
2- यन्त्रवादी प्रकृतिवाद ।
3- जैविक प्रकृतिवाद।

1- पदार्थवादी प्रकृतिवाद - यह पदार्थ को सत्य मानते है तथा वाह्य प्रकृति के नियमों के अध्ययन पर बल देते हैं। इनके अनुसार जगत में जो कुछ भौतिक रूप में उपस्थित है वही सत्य है। यह मानव का अध्ययन भी पदार्थ जगत के नियमों के अनुसार करता है।

2-यन्त्रवादी प्रकृतिवाद - प्रकृतिवादी विचार धारा का यह रूप मनुष्य को एक यन्त्र मानता है, जिस प्रकार यन्त्र कार्य नहीं करता, उसको संचालित करना पड़ता हैं उसी तरह मनुष्य भी वाहरी (परिवेश) के प्रभावों द्वारा संचालित होता है। यह मनुष्य के चेतन तत्व की सत्ता को स्वीकार नहीं करता। उनका मत है कि सम्पूर्ण संसार भी एक प्राणी-विहीन यन्त्र है, जिसका निर्माण पदार्थ तथा गति से मिलकर हुआ है।

3- जैविक प्रकृतिवाद - प्रकृतिवादी विचारधारा का यह रूप डार्विन के विकास वाद के सिद्धान्त पर आधारित है। डार्विन के विकास के दो सिद्धान्त है - (a) जीवन के लिए संघर्ष (Struggle for Existence)
(b) समर्थ का अस्तित्व (Survival of the best)

प्रत्येक प्राणी जीवित रहना चाहता है। जीवित रहने अर्थात अपना अस्तित्व बचाए रखने के लिए उसे निरन्तर संघर्ष करना पड़ता है और संघर्ष से वही जीवित रहता है, जो समर्थ होता है। इस विचार धार के अनुसार बालक को इस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए, जिस से वह अपने आपको परिस्थितियों और वातावरण के अनुकूल बना सके।

प्रकृतिवादी शिक्षा के उद्देश्य -

प्रकृतिविदों ने शिक्षा के कई उद्देश्य बताए हैं जो निम्नलिखित हैं=

1- जीवन संघर्ष के लिए तैयारी - Preparation for life struggle.
2 - बालक का वातावरण के साथ अनुकूलन - Adjustment with environment.
3 - जातीय निष्पत्तियों का संरक्षण करना
पूर्ण जीवन की तैयारी।
5 - व्यक्तित्व का स्वतंत्र विकास करना।

1 - जीवन संघर्ष के लिए तैयारी - प्रकृतिविदों के अनुसार प्रत्येक जीव में जीने की इच्छा होती है, इसी प्रकार मनुष्य में भी जीने की इच्छा होती है और वह अपने जीवन के रक्षा के लिए वातावरण से संघर्ष करता है। डार्विन ने इस सम्बन्ध में जो सिद्धान्त प्रतिपादित किया उसे "जीवन के लिए संघर्ष" कहा गया। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति तथा राष्ट्र को जीवन संघर्ष के लिए तैयार करना है। प्रकृतिवादी भी इस मत से सहमत है तथा चाहते है कि शिक्षा का उद्देश्य बालक को जीवन संघर्ष के लिए तैयार करना होना चाहिए। रॉस के शब्दों में "शिक्षा का लक्ष्य व्यक्ति या राष्ट्र को उस संघर्ष के लिए तैयार करना और विजय योग्य बनाना होना चाहिए।

2 - बालक का वातावरण के साथ अनुकूलन - प्रकृतिवादियों के अनुसार बालकों को ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिए, जिस से वह अपने को वातावरण के अनुकूल बना सकें। इसके लिए बालक को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ होना चाहिए। लैमार्क के अनुसार - "मानव का विकास जीवन के निम्न स्तरों से हुआ है। अतः शिक्षा वह प्रक्रिया है, जो व्यक्ति को उसके वातावरण तथा परिस्थितियों के अनुकूल बनाने में सहयोग प्रदान करती है"।

3 - जातीय निष्पत्तियों का संरक्षण करना - बर्नार्ड शॉ ने शिक्षा का उद्देश्य सभ्यता एवं संस्कृति की रक्षा करना तथा आने वाली पीढ़ी को उसका ज्ञान कराना निश्चित किया है। यह समाज की एक ऐसी उपलब्धि है जो वंशानुक्रम द्वारा नई पीढ़ी तक नहीं पहुँचती है

रॉस के शब्दों में – "शिक्षा स्वयं विकास (उद्विकास) की गति को तेज करने तथा मूलवंशीय सुधार को अधिक शीघ्रताशीघ्र लाने के लिए किया गया मनुष्य का निर्मित प्रयास है, शिक्षा पीढ़ी-दर-पीढ़ी द्वारा मूलवंशीय प्राप्तियों के संरक्षण, हस्तान्तरण और वृद्धि का नाम है।

4- पूर्ण जीवन की तैयारी- बालक की शिक्षा का उद्देश्य उसके पूर्ण जीवन की तैयारी होनी चाहिए। पूर्ण जीवन के अन्तर्गत स्पेन्सर ने आत्मरक्षा, जीविकोपार्जन, वंश वृद्धि एवं शिशु रक्षा, सामाजिक तथा राजनीतिक कार्य और अवकाश के समय के कार्यों को सफलतापूर्वक कर सकना सम्मिलित किए हैं।

5- व्यक्तित्व का स्वतन्त्र विकास करना – टी० पी० नन महोदय ने शिक्षा के उद्देश्य का निर्माण करते समय वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा प्रकृतिवादी दर्शन को अपनाते हुए बताया कि शिक्षा का उद्देश्य वैयक्तिकता का अनियन्त्रित विकास करना है। माटिया और अदावल के शब्दों में – "जो शिक्षा प्रत्येक बालक में अपना निजी व्यक्तित्व विकसित करती है, वस्तुतः वही प्रकृति के अनुसार शिक्षा होती है।

प्रकृतिवादी शिक्षा की विशेषताएँ —

यद्यपि शैक्षिक विचार धारा में प्रकृतिवाद का सर्वप्रथम प्रयोग केल्स और कमेनियस ने किया, परन्तु प्रकृतिवादी आन्दोलन को चरम सीमा पर पहुँचाने का श्रेय 'रूसो' (Rousseau) को है। प्रकृतिवाद के अन्य समर्थकों में पेस्टोलॉजी, फ्रोबेल, हर्बर्ट स्पेंसर आदि हैं।

प्रकृतिवादी शिक्षा की विशेषताएँ—

① प्रकृति का अनुसरण।
② बाल-केन्द्रित शिक्षा पर बल।
③ पुस्तकीय शिक्षा का विरोध।
④ बालक की स्वतन्त्रता पर बल।
⑤ बालक की योग्यताओं, क्षमताओं और रुचियों पर बल
⑥ इन्द्रिय प्रशिक्षण पर बल।

१- प्रकृति का अनुसरण - प्रकृतिवाद ने "प्रकृति की ओर लौटो" का नारा लगाया। उनका मत है कि समाज का वातावरण दूषित है, इसलिए को अपनी प्रकृति के अनुसार स्वयं विकसित होने देना चाहिए। अतः प्रकृतिवादी बालक को विद्यालय और अन्य सामाजिक संस्थाओं के कृत्रिम तथा दूषित वातावरण से दूर रखकर अपने प्राकृतिवातावरण में ही विकसित होने देना चाहते हैं। वे बालक को समाज से दूर प्रकृति की गोद में, जहाँ पर वातावरण शुद्ध हो, शिक्षा देने के समर्थक हैं, उनकी दृष्टि में सच्ची शिक्षा वह है, जो प्रकृति द्वारा बताए गए मार्गों का अनुसरण करे वे प्रकृति को ही सर्वश्रेष्ठ शिक्षक मानते हैं।

२- बाल-केन्द्रित शिक्षा पर बल - प्रकृतिविदों के अनुसार शिक्षा बालक के लिए है न कि बालक शिक्षा के लिए। वे चाहते हैं कि बालक पर पुस्तकों का बोझ न लाद कर उसे इस बात का अवसर देना चाहिए की वह अपने अनुभवों और प्रयत्नों के आधार पर अपने विचारों का निर्माण करे। रास ने कहा है — "प्रकृतिवादी शिक्षा के चित्र में बालक का प्रमुख स्थान है न कि शिक्षा शिक्षालय या विषयों की विषय वस्तु का"। प्रकृतिवादी शिक्षा के प्रादुर्भाव के कारण ही शिक्षा में बालक को प्राधानता प्राप्त हुई।

3- पुस्तकीय शिक्षा का विरोध - प्रकृतिवादी विचारधारा से पूर्व शिक्षा में पुस्तकीय शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता था। प्रकृतिवादियों ने इसका विरोध किया और करके सीखने (Learning by doing) तथा अनुभव द्वारा सीखने पर बल दिया। एडम्स ने कहा है- "शिक्षा में प्रकृतिवाद का अर्थ उन सम्पूर्ण शिक्षा पद्धतियों से है, जो विद्यालयों और पुस्तकों पर निर्भर न होकर वास्तविक जीवन के अध्ययन पर निर्भर रहती है।

4- बालक की स्वतन्त्रता पर बल - प्रकृतिवादियों का मत है कि बालक पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं लगाना चाहिए, उसे स्वतन्त्र रखा जाना चाहिए जिससे उसके स्वाभाविक विकास में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न न हो। कर्मेनियस के अनुसार - प्रकृति ठीक समय पर कार्य करती है।

5- बालक की योग्यताओं, क्षमताओं और रुचियों पर बल - प्रकृतिवादी विचारधारा से पूर्व बालक के मनोवैज्ञानिक तत्वों की पूर्ण उपेक्षा की जाती थी। प्रकृतिवादियों ने बालक की अन्तः प्रकृति का ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य बताया और कहा कि बालक की मूल प्रवृत्तियों, आवश्यकताओं, इच्छाओं, शक्तियों रुचियों, भावनाओं, योग्यताओं और सीमाओं को समझकर उन्हीं के आधार पर विकसित होने का अवसर दिया जाना चाहिए। रूसो के अनुसार - "बालक एक ऐसी पुस्तक है, जिसे आद्यान्त पढ़ना पड़ता है।"

6- इन्द्रिय प्रशिक्षण पर बल - प्रकृतिवादी ने इन्द्रियों को ज्ञान का द्वारा माना, जिसका अर्थ है कि हमारा सम्पूर्ण ज्ञान इन्द्रियों के द्वारा ही मस्तिष्क में प्रविष्ट होता है। इन्द्रियों के माध्यम से ही सत्य ज्ञान की प्राप्ति होती है। यदि हम ज्ञान को प्रभावशाली बनाना चाहते हैं, तो हमें इन्द्रियों को प्रशिक्षित करना होगा। रूसो के अनुसार -

"शिक्षा को इन्द्रियों का उचित प्रयोग करके ज्ञान का द्वार खोलना चाहिए।"

प्रकृतिवाद एवं पाठ्यक्रम

प्रकृतिवादी ने ऐसे पाठ्यक्रम पर बल दिया जो बालकों के नैसर्गिक रुचि, योग्यता और स्वाभाविक क्रियाओं के विकास में सहयोग दे। जिन आधारों पर उन्होंने अपने पाठ्यक्रम का निर्माण किया है, वे आधार निम्नलिखित हैं–

1– पाठ्यक्रम की रचना में बालक को केन्द्र-बिन्दु मान कर करनी चाहिए। प्रकृतिवादियों ने ही सर्वप्रथम यह नारा लगाया कि बालक को बालक ही मानना चाहिए।

2– पाठ्यक्रम बालक की मूल प्रवृत्तियों, योग्यताओं, क्षमताओं और स्वाभाविक क्रियाओं के अनुकूल होना चाहिए

3– बालक को विकास के विभिन्न अवस्थाओं जैसे – शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था आदि से होकर गुजरना पड़ता है। विभिन्न अवस्थाओं में बालक में शारीरिक और मानसिक परिवर्तन होता है। प्रकृतिवादी का मत है कि पाठ्यक्रम विभिन्न अवस्थाओं के विभिन्न आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए।

4– पाठ्यक्रम में ऐसा होना चाहिए जिस में मानव को स्वतन्त्रतापूर्वक अपनी अभिरुचियों को विकसित करने का अवसर प्राप्त हो सके।

5– पाठ्यक्रम में इन्द्रिय प्रशिक्षण को विशेष स्थान मिलना चाहिए।

रूसो का मत है कि बालक के शारीरिक विकास पर ध्यान देने के लिए पाठ्यक्रम में — खेलकूद, गिनना, नापना, तैरना, दौड़ना, सिरीस करना, संगीत एवं नृत्य आदि को स्थान दिया जाना चाहिए

प्रकृतिवाद और शिक्षण विधियाँ –

शिक्षण विधियों के क्षेत्र में प्रकृतिवाद ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। प्रकृतिवादी शिक्षणविधियों के निम्नलिखित आधार है –

1– करके सीखना 2– अनुभव द्वारा सीखना
3– खेल द्वारा सीखना।

रूसो के अनुसार – अपने छात्र को मौखिक पाठ मत पढ़ाओ, उसे केवल अनुभव से सीखने दो। जब भी संभव हो आप कार्य द्वारा पढ़ाएं। शब्दों का सहारा तभी लें, जब कार्य करना संभव न हो।

प्रकृतिविदों का मत है कि बालक की शिक्षा व्याख्यानों द्वारा नहीं होनी चाहिए। जिस विषय वस्तु का बालक को ज्ञान कराया जा रहा है, उसके सम्पर्क में बालक को लाकर शिक्षा देनी चाहिए।

प्रकृतिविदों द्वारा प्रतिपादित विभिन्न शिक्षण विधियां –

1 – ह्यूरिस्टिक विधि।
2 – डाल्टन विधि।
3 – प्रत्यक्ष विधि।
4 – निरीक्षण विधि।
5 – खेल विधि।

प्रकृतिवाद एवं शिक्षक -

प्रकृतिवादी 'प्रकृति' को ही सब से उत्तम शिक्षक मानते हैं। प्रकृतिवादी शिक्षा में शिक्षक को कोई महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त नहीं है। शिक्षक का कार्य केवल ऐसे वातावरण का निर्माण करना है, जिसमें बालक स्वयं अपने अनुभव के द्वारा ज्ञान प्राप्त कर सके। वे शिक्षक को किसी प्रकार का हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं देते। प्रकृतिवादियों के अनुसार बालक के लिए शिक्षक का कार्य प्रकृति करती है।

रॉस के अनुसार - प्रकृतिवाद में शिक्षक का स्थान पर्दे के पीछे रहने वाले सूत्रधार का है। वह बालक के विकास को देखने वाला पर्यवेक्षक है।

प्रकृतिवाद एवं अनुशासन -

प्रकृतिवादी स्वतन्त्रता के पक्षपाती हैं। अतः वे अनुशासन के लिए बाहरी हस्तक्षेप का विरोध करते हैं और शारीरिक दण्ड व्यवस्था को अन्यायपूर्ण मानते हैं।

रूसो का कथन है -

बच्चों को कभी दण्ड नहीं दिया जाना चाहिए। अनुशासन सदैव बालकों की गलतियों के प्राकृतिक परिणामों द्वारा होना चाहिए।

हर्बर्ट स्पेन्सर भी प्राकृतिक दण्ड व्यवस्था के पक्षपाती थे। उन्होंने अनुशासन की समस्या का समाधान 'सुख-दुःख के सिद्धांत' के आधार पर किया। उनका मत था कि जिस कार्य को करने पर बालक को सुख मिलता है उसे वह स्वीकार करता है और जिस कार्य को करने से उसे दुःख मिलता है उसे वह अस्वीकार करता है।

प्रकृतिवाद एवं विद्यालय :-

प्रकृतिवादियों के अनुसार कठोर बन्धनों वाली संस्था न होकर स्वतन्त्र वातावरण प्रदान करने वाली संस्था होनी चाहिए। उनका मत है कि प्रकृति ही वास्तविक विद्यालय है जहाँ हम बहुत कुछ सीखते हैं। विद्यालय का संगठन ऐसा हो जहाँ बालकों को स्वतन्त्र विकास के लिए उपयुक्त वातावरण मिल सके जिस से बालक अपनी शक्तियों का पूर्ण विकास कर सके

रूसो के अनुसार - विद्यालय ऐसे स्थान पर होने चाहिए, जहाँ पर बालक हानिकारक प्रभावों से दूर रहे।

प्रकृतिवाद एवं बालक :-

प्रकृतिवाद बालक में जन्मजात अच्छाई तथा श्रेष्ठता के दर्शन करता है तथा उसी का विकास करना चाहता है। बालक में बुराई समाज से आती है, क्योंकि समाज अपनी रूढ़ियों, परम्पराओं एवं अन्धविश्वासों को भावी पीढ़ी को प्रदान करता है, इस से बालकों में स्वाभाविक विकास नहीं हो पाता। सम्पूर्ण शिक्षा जीवन की तैयारी बन जाती है तथा बालक का वर्तमान जीवन उपेक्षित कर दिया जाता है। प्रकृतिवादी बालक को इन स्थिति से बचाना चाहता है। पेस्टालॉजी ने बालक की तुलना बीज से की है। रूसो की पुस्तक एमील में विभिन्न बालकों की अवस्थाओं के लिए विभिन्न पाठ्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की गई है।